वर्ष - 2

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

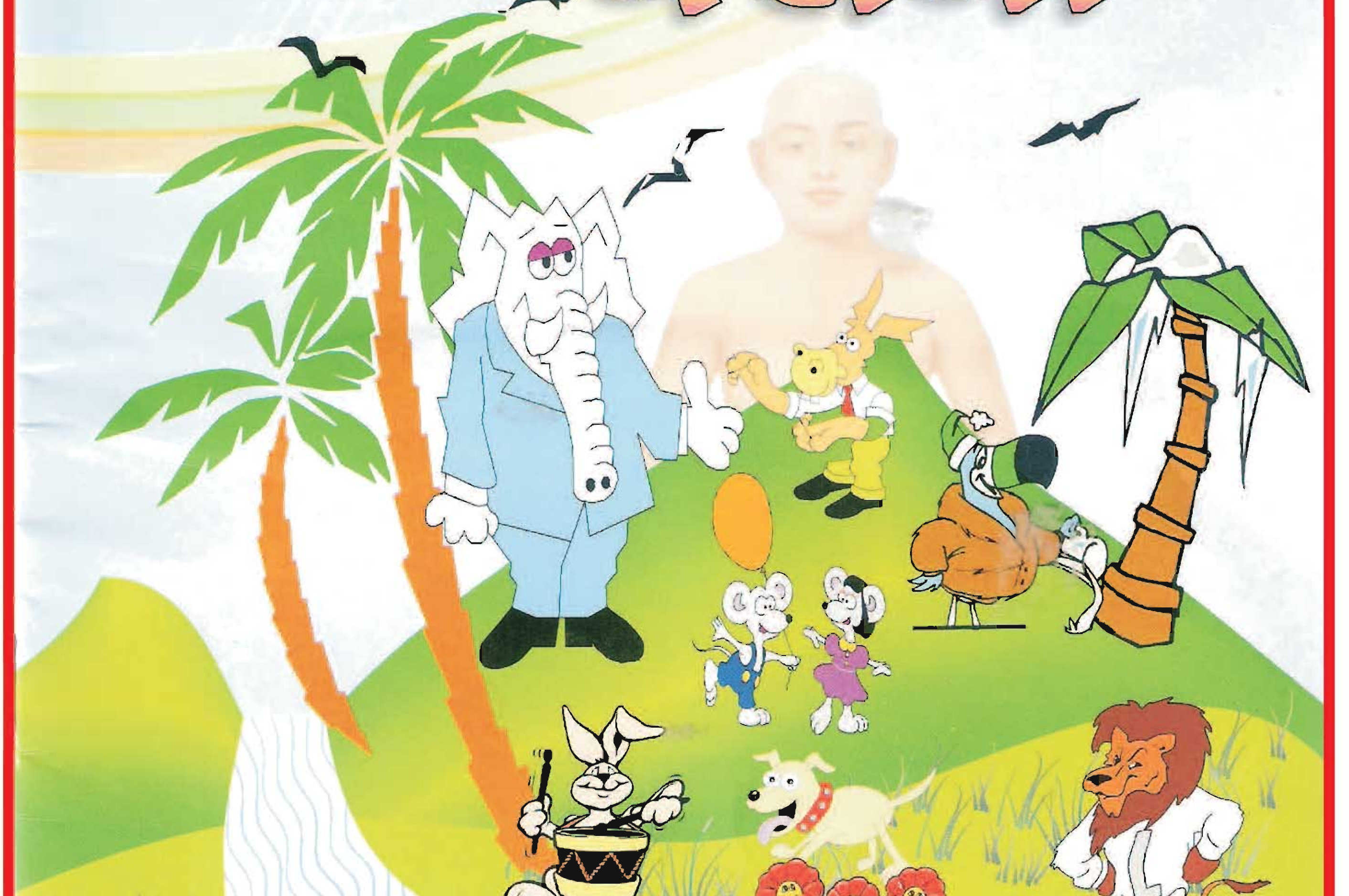

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

कसौटी

कौशाम्बी नगरी में अंगारक नाम का कुशल कलाकार रहता था। वह धर्म प्रेमी और उदार हृदय का व्यक्ति था। उसका मुख्य कार्य सोने चांदी के आभूषणों में हीरे-मोती लगाना था। उसकी इस कला की प्रसिद्धि बहुत दूर-दूर तक थी। उसकी कला की जानकरी पाकर वहाँ के राजा गंधर्वसेन ने उसे अपने राजमहल में बुलाया और कीमती पद्मराग मणि देकर सोने के आभूषण बनाने के लिए कहा। राजा से कार्य पाकर कलाकार बहुत खुश हुआ और स्वयं को अत्यन्त सौभाग्यशाली समझने लगा। घर आकर उसे वह मणि को अच्छी तरह देखा। तभी उसने बाहर देखा कि उसने नग्न दिगम्बर मुनिराज ज्ञानसागर आहार के लिए उसके घर की ओर आ रहे हैं। मुनिराज को देखकर अंगारक अत्यन्त प्रसन्न हुआ और तुरंत शुद्ध वस्त्र पहनकर मुनिराज के पड़गाहन के लिये खड़ा हो गया। विधि पूर्वक मुनिराज को आहार कराया। आहार कराकर वह सोचने लगा वीतरागी संत को आहार देकर मेरा जीवन धन्य हो गया। मुनिराज वापस वन में चले गये।

वापस आकर उसने वह पदमराग मणि को देखा तो वहाँ वह मूल्यवान मणि नहीं मिली। उसने उस मणि की तलाश में पूरा घर देखा लिया परंतु वह मणि नहीं मिली। उसे चिंता हो गई,उसका शरीर कांपने लगा। उसके मन में विचार आने लगे - यदि राजा को वह मणि नहीं दिया तो राजा मुझे मृत्युदण्ड दे देगा। लेकिन वह मणि गया कहाँ ? घर में तो मुनिराज के अलावा कोई नहीं आया। ऐसा सोचते हुये मणि नहीं मिला तो मुझे लोग चोर समझेंगे, मेरी सारी इज्जत धूल में मिल जायेगी। ऐसा सोचते हुये उसकी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा। तभी उसके मन में एक खोटा विचार आया- मेरे घर में मुनिराज के अलावा और कोई नहीं आया। जरूर वह मणि मुनिराज ले गये होंगे। वह साधु के वेश में कोई ढोंगी था। अभी पता लगाता हूँ। ऐसा सोचकर वह मुनिराज को खोजने के लिये क्रोध में जंगल की तरफ भागा। जंगल जाकर देखा तो मुनि ज्ञानसागर ध्यान में लीन थे। मुनिराज को देखकर वह बोला-अरे पाखण्डी ! जल्दी बोल ! मेरा मणि कहाँ हैं ? मुनिराज तो ध्यान में लीन मौन थे। अंगारक पुनः बोला - ध्यान करने का नाटक करता है जल्दी बोल ! वरना अभी लाठी से तेरा सर फोड़ दूंगा। मुनिराज को मौन देखकर उसने मुनिराज को लाठी मारना चाही तो वह लाठी पेड़ पर बैठे मोर के गले में लगी और तभी मोर के मुंह से चमकीली वस्तु नीचे गिरी। आश्चर्य से अंगारक ने उसे उठाकर देखा तो मुनिराज के चरणों में गिर पड़ा क्योंकि जिस मणि के लिए वह वीतरागी दिगम्बर मुनिराज को मार रहा था वह तो मोर के गले से गिर गई। उस समझ में आ गया। जब मुनिराज आहार कर रहे थे तब मोर ने चमकती मणि को खाने की वस्तुसमझकर खा लिया होगा और वह मणि उसके गले में अटक गई होगी।

उसे स्वयं से ग्लानि हो गई उसने बिना सोचे समझे मुनिराज पर वार कर दिया। वह जोर-जोर से रोने लगा और बोला हे मुनिवर ! मुझे क्षमा कर दो। मैंने भयंकर पाप किया है।

मुनिराज ने आंखें खोलीं और कहा इस जड़ मणि को राजा को वापस करके आओ और अपने चैतन्य मणि को पहचानो। यही जीवन में करने योग्य कार्य है।

मुनिराज की आज्ञा पाकर अंगारक राजा को वह मणि वापस करके सारी कहानी सुना दी और लौटकर मुनिराज के चरणों में प्रणाम स्वयं मुनि दीक्षा ले ली। सम्यग्दर्शन प्राप्त कर अपना कल्याण कर लिया।

- बोधि समाधि निधान से साभार

शहद खाने से हानि

1. शहद खाने से अनेक जीवों की हत्या होती हैं।
2. मधुमक्खी अनेक प्रकार के फूलों के रस को जमा करके अपने मुँह में लेकर तैयार करती है। इससे शहद जूठा है।
3. मधुमक्खी का भी अपने घर जैसा उसका परिवार रहता है। जिसे नष्ट करके श ह द निकालते हैं।
4. मधुमक्खी फूलों से मिठास जमा करने के साथ अपने अंडे एवं मल उसीमें डालती हैं ।
5. शहद के मिठास के लिए मधुमक्खी के परिवार को बरबाद व तहस नहस कर देते हैं ।
6. मधुमक्खी फूलों से मिठास जमा करते समय फूलों को थोडा सा भी दुःख नहीं देती।
7. शहद खाना महापाप है।
8. मधुमक्खी दिन-रात परिश्रम करके फूलों से मिठास जमा करती है और लोग उसे पलभर में नष्ट कर देते हैं।
9. शहद फिर इकट्ठा करने में मधुमक्खी को महिनों परिश्रम करना पड़ता है। तब उनका परिवार बनता है।
10. शहद खाने योग्य नहीं है और सर्वथा अभक्ष्य है एक बूंद शहद खाने में सात गाँव जलाने का पाप लगता है।

वीर प्रभु की हम संतान

वीर प्रभु की हम संतान, पढ़े लिखे होवें विद्वान ॥

मन पढ़ने में सदा लगाते, रोज सबेरे मंदिर आते ।

अपना जीवन बने महान, वीर प्रभु...........

पंच प्रभु हैं ईश हमारे चरणों में नमन हमारे ।

नित हम करते हैं गुणगान, वीर प्रभु..........

महावीर की वाणी सुनेंगे, आतम अनुभव आज करेंगे ।

हम भी बनेंगे फिर भगवान, वीर प्रभु......

– विराग शास्त्री

सच बोलेंगे.....

बच्चे खेल रहे थे खेल, रामू ने फेंकी थी गेंद ॥

दूध गिरा, मम्मी चिल्लाई, किसने फेंकी, आफत आई ॥

बच्चे लगे कांपने थर थर, रामू बोला तब सच सच ॥

सच सुन माँ अति हर्षाई, गोद उठा अति ही मुसकाई ॥

बच्चे बोले 'सच बोलेंगे', अब तो हम भी सच बोलेंगे ॥

सच बोलेंगे, सच बोलेंगे, झूठ कभी भी नहीं बोलेंगे ॥

हमारे आराध्य नवदेव

इसके पहले के अंकों में आप अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय परमेष्ठी के बारे में पढ़ चुके हैं।

अरिहंत

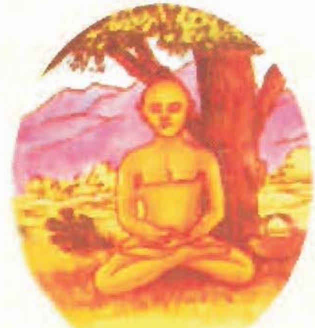

जिनवाणी

सिद्ध

5. साधु परमेष्ठी

जिनबिम्ब

णमोकार मंत्र में णमो लोए सव्व साहूणं में हम जिन्हें नमस्कार करते हैं। दिगम्बर साधु विषय भोगों से दूर, परम दिगम्बर (नग्न) अवस्था के धारी होते हैं। वे 28 मूलगुणों का पालन करते हैं। उनका मुख्य कार्य आत्मध्यान और आत्मचिंतन है। वे संसार के समस्त कार्यों से दूर रहते हैं। उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति होता है। ऐसे दिगम्बर मुनिराजों को हमारे अनंत नमन।

आचार्य

जिनधर्म

An Upadhaya is the reader of holy scriptures. He himself learns and teaches other monks. He is a teacher of ethico-spiritual values.

साधु

जिनालय

फरमान-ए-जहांगीरी
(जहांगीर का आदेश)

मूल पाठ

खानदाने मुगलिया के शहनशाह जहांगीर का ईद के मौके पर शाही फरमान

आज से 399 साल पेशनर 26 फरवरी सन् 1605 को जैनधर्म के मुकद्दस इबादत्ती माह भादौं के बारा मुकद्दस ऐय्यास के दौरान मवेशियों और परिन्दों को जबह करना बन्द किया गया है।

''नाक़ाबिले फ़रामोश''

हमारी सल्तनत के मूमालिक महरुसा के जुमला हुक्काम, नाजिमान, जागीरदारान को वाज़ेज हो फ़तूहति दीनवी के साथ हमारा दिलो मनशा खुदाय बर तर को जुमरा मखलूक की खुनवूदी हासिल करना है। आज ईद के मौका पर बा बदौलत को कुछ जैन (हिन्दुओं) की तरफ से इस्तेदा पेश की गई है कि ''माहे भादौं के मौके पर उनके वारा मुकद्दस ऐय्यास में जानवरों को मारना बन्द किया जाए।'' हम मज़हबी उमूर में हर मज़हब व मिल्लत के अग़राज व मकासद की तफसील में हर जो रुह का एक जैसा खुश रखना चाहते हैं, इसलिए यह दरखास्त मंजूर करते हुए ''हम हुक्म देते हैं कि भादौं के इन बारा मज़हबी ऐय्यास में जो (जैन-हिन्दुओं) के मुक़द्दस और इबादती ऐय्यास हैं, इनमें किसी किस्म की कुरबानी या किसी भी जानवर को हलाक करने की मुमानियत होगी'' और इस हुक्म की तामील न करनेवाला मुजरिम तसव्वर होगा। यह फ़रमान दवामी तसव्वर हो।

दस्तख़त मुबारिका
शहनशाह जहांगीर
मुहर

हिन्दी- अनुवाद

मुगल खानदान के बादशाह जहांगीर का ईद के अवसर पर शाही-आदेश

आज से 399 वर्ष पहले 26 फरवरी सन् 1605 को जैनधर्म के पवित्र-पर्व 'भादों' मास के बारह पवित्र दिनों में पशु और पक्षियों का वध (मारना); बन्द किया गया।

'नहीं भूलने योग्य'

हमारे राज्य के प्रत्येक सूबे के समस्त हाकिम नाजिम, जागीरदारों को ज्ञात हो कि धार्मिक-विजय के साथ हमारी हार्दिक इच्छा श्रेष्ठ प्रभु की समस्त प्रजा-प्रज्ञा-समृद्धि प्राप्त करना है। आज ईद के अवसर पर मुझे जैन (हिन्दुओं) की तरफ से निवेदन किया गया है कि ''भादों माह के अवसर पर उनके बारह पवित्र दिनों में पशुओं का मारना बन्द किया जाए।'' हम धार्मिक-वातावरण में हर धर्म, जाति की आवश्यकता व अभिप्राय की पूर्णता में हरेक का उत्साहवर्धन करना चाहते हैं। इसलिए यह आवेदन-पत्र स्वीकार करते हुए 'हम आज्ञा देते हैं कि भादों मास के इन बारह धार्मिक दिनों में जो जैन (हिन्दुओं) के पवित्र पर्व के दिन हैं, इनमें किसी प्रकार की कुरबानी (धन) या किसी भी पशु को मारने की मनाही होगी' और इस आदेश की अवहेलना करने वाला अपराधी माना जाएगा। यह आदेश हमेशा के लिए लागू रहे।

हस्ताक्षर
बादशाह जहांगीर
मुहर

अब नहीं नाचूंगी

जिज्ञासा - मनु ! कहाँ जा रही हो ?

मनु - बस ! मैं मंदिर जा रही हूँ।

जिज्ञासा - हाँ ! तुझे मालूम है अपने मंदिर में सिद्धचक्र मण्डल विधान होने वाला है।

मनु - अरे वाह ! यह तो बहुत खुशी की बात है।

जिज्ञासा - खुशी की तो बात ही है मनु। अपने जिनमंदिर में भक्ति होगी पूजन-विधान का लाभ मिलेगा और अनेक विद्वानों के प्रवचन भी होंगे। मैं तो इन्द्राणी बनकर पूजन करुँगी।

मनु - अरे मुझे नहीं बनना इन्द्राणी। एक तो मेरे पति को टाइम नहीं मिलता और मुझे सबके सामने नृत्य करने में शर्म आती है।

जिज्ञासा - अरे इन्द्र-इन्द्राणी बनकर पूजन करने से विशेष आनंद आता है और हमें अपने परिवार के विवाह जन्मदिन बीमारी आदि के प्रसंग पर समय मिल जाता है तो फिर जिनेन्द्र भगवान के गुणगान में समय का बहाना क्यों करना।

मनु - हाँ ! बात तो तुम ठीक कह रही हो।

जिज्ञासा - रही नृत्य की तो यह तो अपने-अपने परिणामों की बात है। यदि इच्छा हो तो नृत्य करने में शर्म कैसी और जब तुम अपने भाई की शादी में सड़क पर नाच रही थी तब तुम्हें शर्म नहीं आई।

मनु - वो तो खुशी का अवसर था।

जिज्ञासा - तो क्या भगवान की पूजन भक्ति दुख का अवसर है, तुम्हें नहीं मालूम स्त्रियों को सड़क पर नाचना शोभा नहीं देता इसमें कुशील का दोष लगता है न जाने कैसे-कैसे लोग हमें देखते हैं, हम लोगों को तो अपनी मर्यादा में रहना चाहिए।

मनु - लेकिन................।

जिज्ञासा - लेकिन-वेकिन कुछ नहीं यह अपने जैन शासन की मर्यादा है हमें जिनशासन का गौरव बढ़ाना चाहिए। उस पर कलंक नहीं लगाना चाहिए।

मनु - हाँ जिज्ञासा ! तुम ठीक कह रही हो, अब मैं नियम लेती हूँ कि मैं सड़क पर कभी नहीं नाचूँगी और अपने पति के साथ इन्द्र-इन्द्राणी बनकर विधान में जरुर बैठूँगी।

-विराग शास्त्री

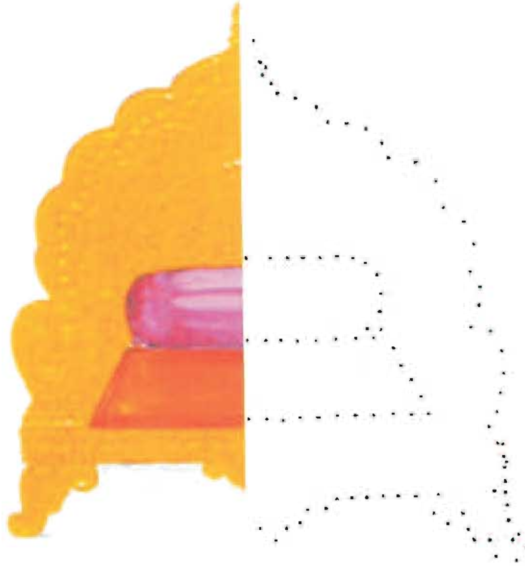

Join the dots and make a Picture.

बिन्दुओं को जोड़कर एक चित्र बनायें।

1

3

5

4

2

टुकडों के नंबर सही खंड से मिलाकर चित्र पूर्ण करें।

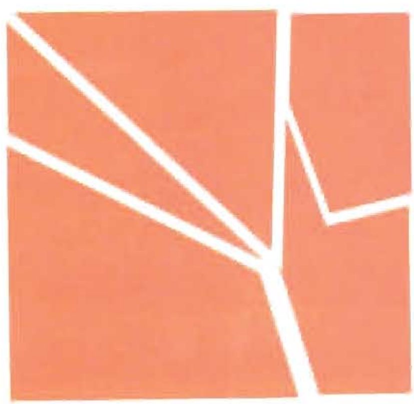

जीवन का गणित

जीवन एक गणित है
इसमें दोस्ती का जोड़ करो, दुश्मनी को घटा दो।
खुशियों को गुणा करो, दु:खों का भाग दो ।।
पर कभी निराश मत हो।
ऐसा करने पर अपने आप ही,
जिंदगी पूर्णांक बन जायेगी ।।

एक नया काम

आज फिर नई सुबह ने ली अंगड़ाई ,
जगा रही उमंग तरंग।
याद दिला रही, सुधारो कल की कमियों को।
विश्वास जगा रही ये सुबह।
सुबह कभी नहीं दोहराती ।।
हर सुबह नई किरण के साथ ढ़ेरों पैगाम लाती।
बना लो इसे जीवन का सिद्धांत,
हर दिन करो जरूर, एक नया काम ।।

नन्हे कवि

शास्त्र की विनय करना, है सब बच्चों का कर्म,
शास्त्र का स्वाध्याय करना, है सब बच्चों का धर्म।
शास्त्र से करें अर्जन ज्ञान, करें हम अपना आत्म कल्याण
शास्त्र ही मात्र ऐसा साधन, जिससे हो हमें धर्म का भान ।।

आदि राज पाटनी- भोपाल

इस प्रतियोगिता के अंतर्गत आप एक छोटी सी कविता बनाकर भेजें।
ध्यान रहे कविता आपके द्वारा स्वयं तैयार की जाना चाहिये। कविता भेजने की
अंतिम तिथि **20 जनवरी 2007 है**

गोम्टेश्वर बाहुबली

की प्रतिमा को भारत के सात आश्चर्यों में पहला स्थान

1

आपको यह सूचित करते हुये गौरव का अनुभव हो रहा है कि कर्नाटक के श्रवणबेलगोला स्थित गोम्टेश्वर बाहुबलीजी की भव्य प्रतिमा को भारत के सात आश्चर्यों में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। आपको याद होगा कि चहकती चेतना के पिछले अंक में हमने हमारे तीर्थक्षेत्र के अंतर्गत गोम्टेश्वर बाहुबली का परिचय प्रकाशित किया था।

मुख्यमंत्री राजस्थान

संदेश

महानुभाव
संपादक महोदय
चहकती चेतना, जबलपुर

दीपावली के पावन अवसर पर आपका शुभकामना संदेश और फटाका विरोधी पोस्टर प्राप्त हुआ। आपके द्वारा चलाया जा रहा अहिंसा अभियान आत्म हित के साथ राष्ट्र हित में सहायक है यह प्रकाश पर्व आपके जीवन में नयी रोशनी और स्फूर्ति का संचार करे। आपके और आपकी संस्था परिवार के जीवन में सुख, समृद्धि और खुशहाली लाये इन्हीं शुभकामनाओं के साथ ...

भवदीया
वसुन्धरा राजे
वसुन्धरा राजे

Four States (Gati)

1. Human State
2. Tiryanch State
3. Heaven State
4. Hell State

Dev Gati
Heaven state

When a living being after death takes rebirth in Heaven, it is said to be born in the heaven state. Heaven is believed to be present above the Earth. Heavenly beings enjoy wealth, prosperity and are sad when they partfrom it.

Narak Gati
Hell State

When a living being after death takes rebirth in Hell, it is said to be born in the Hell state. There are seven lands beneath the Earth known as Hell. living being in Hell are always unhappy as they suffer from hunger, thirst, extreme hot and cold temperature. they are low tempered and often fighting with each other.

Tiryanch Gati
Tiryanch state

When a living being after death takes rebirth in the body of a Tiryanch, it is said to be born in Tiryanch state. Earth, water, fire, air, trees, insects, fish, birds, reptiles, lion, other mammals are known as Tiryanch.

Manushya Gati
Human state

When a living being after death takes rebirth in the body of a human being, it is said to be born in Human state.Before a living being dies, it decides its rebirth in any one of these four states on the basis of its deeds and conduct in the previous lifetime.

DHANYA MUNIDASHA

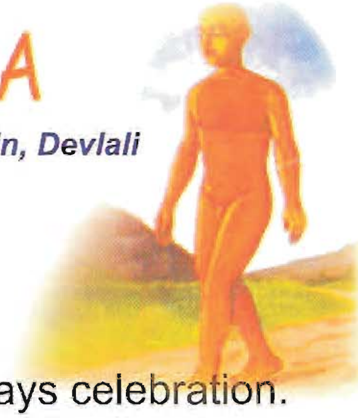

- Gyayak Jain, Devlali

Dhanya Munidasha
Inaccessable, Incalcutable,
Incessant Irrovacable,
Adorned with Right Character.
Dhanya Munidasha !
Connoissuer, Salvation Bier.
Impenetrable -
You are Benedictor.
Toleration. Always celebration.
Unmeasurable Comprehensive.
Dhanya Munidasha !

अर्थात् मुनिदशा धन्य है, हे मुनि ! आप अगम्य हो, आपके स्वरूप की गणना नहीं की जा सकती, आपने अनवरत् अटलता को धारण किया है। आप सम्यक् चारित्र से अलंकृत हो।

आप रत्नत्रय के पारखी हो, मोक्षार्थी हो, आप अभेद्य व मंगलकारी हो । आप सहनशीलतापूर्वक अपनी मस्ती में मस्त रहते हो। आपका व्यक्तित्व अत्यन्त स्पष्ट है।
अहो ! धन्य है ऐसी मुनिदशा ।।

हमारे तीर्थक्षेत्र

सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि

*सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले से **75** कि. मी. दूरी पर बड़ामलहरा जनपद में स्थित है। श्यामरी नदी के किनारे स्थित इस क्षेत्र से गुरूदत्त मुनिराज ने उपसर्ग अवस्था में निर्वाण प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त साढ़े आठ करोड़ मुनिराजों ने मोक्ष प्राप्त किया। यहाँ पर्वत पर **31** भव्य जिनमंदिर व तीन गुफायें है। सम्मेद शिखर जैसा दिखाई देने के कारण इसे लघु सम्मेदशिखर भी कहा जाता है। यहाँ गुरूदत्त निर्वाण गुफा, काँच मंदिर, चौबीस मंदिर, चतुर्थकालीन मानस्तंभ एवं संग्रहालय दर्शनीय है। नदी के दूसरी ओर **10** एकड़ की भूमि पर तीर्थधाम सिद्धायतन का निर्माण हुआ है।*

*क्षेत्र पर आवास और भोजन की समुचित व्यवस्था है। द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र से अहारजी **58** कि.मी., कुण्डलपुर **147** कि.मी., नैनागिर **88** कि.मी., सोनागिरि **225** कि.मी., देवगढ़ **152** कि.मी. और खजुराहो **104** कि. मी. की दूरी पर स्थित है। इन क्षेत्रों की वंदना अवश्य करें।*

सीख

फूलों से तुम हंसना सीखो, भौरों से तुम गाना ।
सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना ।।

वायु के झोंकों से सीखो, बढ़ना और बढ़ाना ।
मेंहदी के पत्तों से सीखो, पिसकर रंग चढ़ाना ।।

सुई और धागे से सीखो, बिछुड़े बंधु मिलाना ।
दूध और पानी से सीखो, मिलकर प्रेम बढ़ाना ।।

वृक्षों की डाली से सीखो, फल आए झुक जाना ।
संतों की वाणी से सीखो, अंतर्ज्योति जगाना ।।

चौरासी के बंधन काटो, जीवन सफल बनाना ।
आतम में अपनापन करके , शीघ्र अमर पद पाना ।।

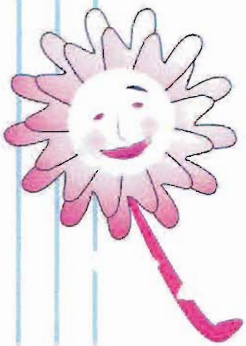

- साभार संस्कारोदय

Pussy Cat

Pussy Cat Pussy Cat Where had you been
I had been to jungle to see muniraj
Pussy Cat Pussy Cat What did you do there
I asked to muniraj how to be happy
Pussy Cat Pussy Cat Where had you been
Pussy Cat Pussy Cat what said muniraj
Muniraj said, see, know and be happy
Pussy Cat now tell us what will you do
Pussy Cat said I will now my soul only.

-Sanjay Jain, JBP
-Virag Shastri

प्रेरक प्रसंग

करुणा कहान की

सोनगढ़ की महान विभूति कहान गुरुदेव जब कहीं घूमने निकलते थे तो उनके साथ अन्य लोग भी साथ चलते थे। रास्ते में यदि कोई साथी धोखे से भी सूखे पत्ते पर भी पैर रखता था तो कहते थे – अरे भाई ! देख कर चलो। इस पत्ते में हमारे अनंत भव के माँ–बाप हो सकते हैं। हरी घास पर पैर रखने पर गर्भवती स्त्री के पेट पर पैर रखकर चलने जैसा भयंकर पाप होता है। धन्य है कहान गुरुदेव की करुणा।

नियम

एक बार दिल्ली में शाम के समय वर्णीजी भागे जा रहे थे। तभी जवाहरलाल नेहरु किसी आवश्यक कार्य से संसद भवन जा रहे थे। वर्णीजी को भागते हुये देखकर नेहरुजी ने अपनी कार रोककर वर्णीजी से पूछा कि आप इतनी तेज कहाँ भागे जा रहे हैं ? तो वर्णीजी ने कहा–कि मैं रात्रि भोजन नहीं करता और कुछ समय बाद रात होने वाली है यदि मैं समय पर घर पहुँच गया तो समय पर भोजन मिल जायेगा। यह सुनकर नेहरुजी ने अपनी कार में वर्णीजी को बिठाकर उन्हें उनके निवास स्थान पर छोड़ दिया और कहा मुझे लगा कि मेरे कार्य से ज्यादा आपका नियम पालन महत्वपूर्ण है।

निश्चय

गुजरात का आभू सेनापति जैन धर्म का पालन करने वाला वीर सैनिक था। एक बार वे पानी से एक चींटी को निकाल कर बचा रहे थे। तब राजा ने कहा – सेनापतिजी ! आप युद्ध में हजारों मनुष्यों को मार डालते हो और यहाँ एक चींटी को बचा रहे हो। आप यदि इस चींटी को मार डालें तो मैं आपको एक हजार सोने के सिक्के दूँगा। आभू सेनापति ने कहा–राजन्! युद्ध में देश की रक्षा की दायित्व है। वहाँ किसी को मारने नहीं देश बचाने जाता हूँ। यदि देश की रक्षा करते हुये काई मारा जाये तो मेरा क्या अपराध है ? यहाँ आप एक चींटी को मारने पर अपना पूरा राज्य भी दे दो तो भी मैं किसी को नहीं मार सकता। व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये किसी को भी मारना भयंकर पाप है। ऐसे थे हमारे वीर पुरुष।

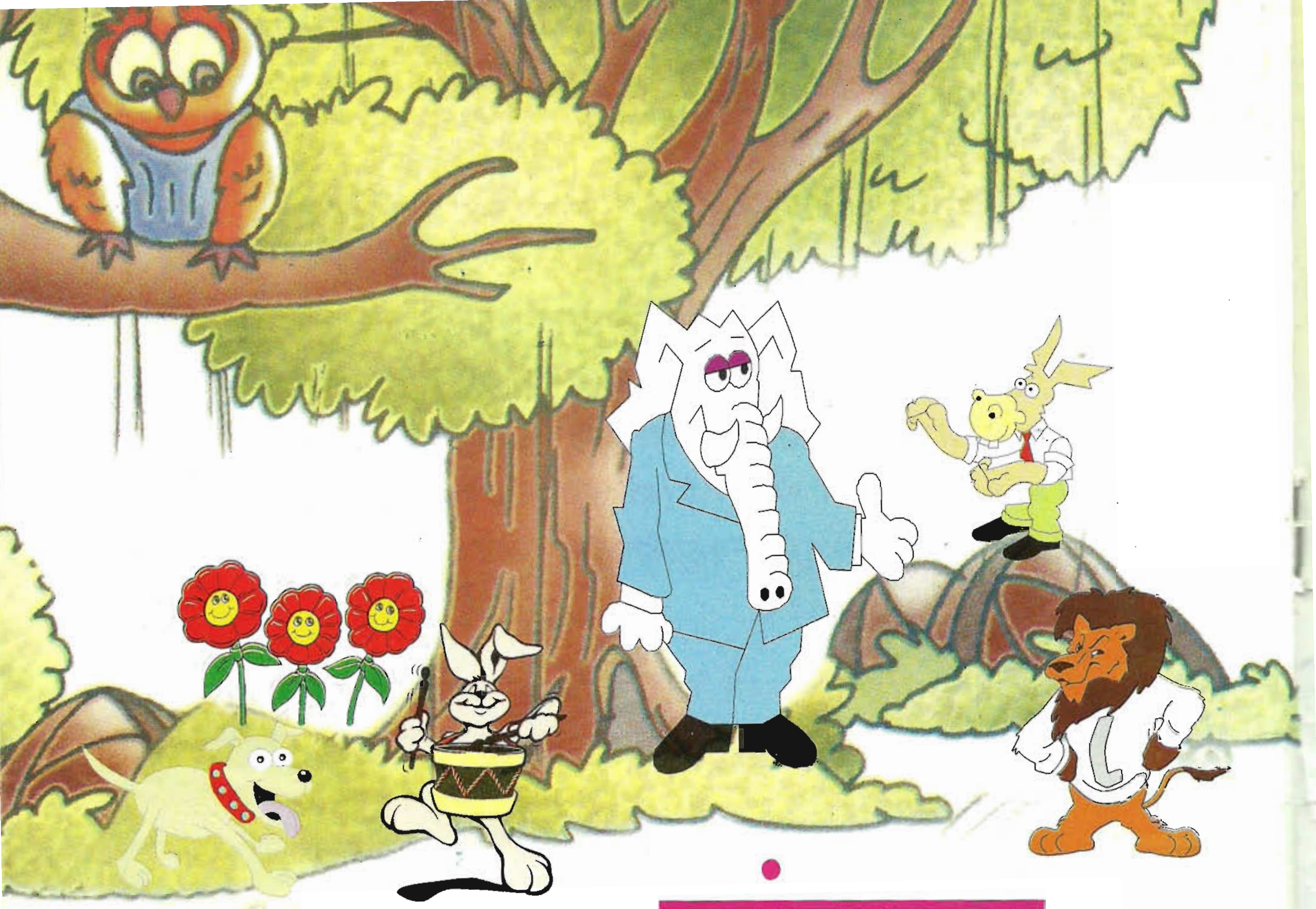

जंगल का नया वर्ष

सन्मति वन में काफी चहल पहल थी। शहर से घूमकर आई बिल्ली मौसी ने सबको नया वर्ष धूमधाम से मनाने के लिये तैयार कर लिया था। वैसे सन्मति वन में हर निर्णय वन के मंत्री सुंदर हाथी ही करते थे। वे इस समय किसी आवश्यक कार्य से मुक्ति बाग गये थे। सन्मति वन में नया वर्ष मनाने की परंपरा नहीं थी। सुंदर हाथी को वन में न देखकर बिल्ली मौसी ने सोचा कि यही अवसर है जब हम अपने मन से कुछ काम कर पायेंगे। सन्मति वन का वातावरण शांत था सभी जानवर धर्म प्रिय थे। बिल्ली मौसी को धर्म की रूचि बिलकुल नहीं थी। बिल्ली मौसी ने सबसे कहा कि शहर में नया वर्ष धूमधाम से मनाया जाता है और हम लोग हमेशा धर्म की चर्चा करने के पीछे लगे रहते हैं। अरे भाई ! जीवन में मौज मस्ती का होना चाहिये। पता नहीं फिर ये जीवन कब मिलेगा ? धर्म तो बुढ़ापे में करना चाहिये। बिल्ली मौसी के बहकावे में आकर जंगल के सभी जानवरों ने मौज मस्ती से नया वर्ष मनाने की तैयारी प्रारंभ कर दी। कुछ जानवर रंगीन झंडे ले आये। कोयल रानी ने माईक सिस्टम मंगा लिया। चंगू-मंगू कुत्तों ने जंगल की सफाई शुरू कर दी। भोलू हाथी ने मंच के लिये लकड़ी लाना शुरू कर दी और गायें भोजन के लिये सामान जमा करने लगीं। इस तरह सभी जानवर अपनी अपनी तैयारियों में जुट गये।

कार्यक्रम के दो दिन पहले सुंदर हाथी अपना कार्य पूरा कर समय से पहले सन्मति वन पहुंच गये और जंगल की चहल-पहल देखकर आश्चर्यचकित रह गये। चंगू-मंगू कुत्तों की सफाई करते देखकर उनसे पूछा कि क्यों भाई! अपने वन में क्या हो रहा है? क्या कोई मुनिराज सन्मति वन में पधारे हैं?

सुन्दर हाथी चंगू-मंगू कुत्तों से नया वर्ष मनाने की बात सुनकर अत्यंत आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि आज तक सन्मति वन में नया वर्ष नहीं मनाया गया। फिर इस वर्ष मुझसे बिना पूछे ये काम कैसे हो रहा है? जरूर इसके पीछे बिल्ली मौसी की चाल है। उसने सारी बात उनसे पूछकर तुरंत चंपू गधे को बुलाया और कहा कि तुम तुरंत जंगल में घोषणा करवा दो कि दो घंटे बाद जंगल के सभी जानवरों की आनंद भवन में आवश्यक मीटिंग रखी गई है। सभी जानवरों को मीटिंग में आना अनिवार्य हैं।

तुरंत घोषणा कर दी गई। सभी को पता था कि हाथी दादा नये वर्ष के बाद आने वाले हैं। उनके आने की खबर और मींटिग की बात सुनकर सभी जानवर समय पर आनंद भवन में उपस्थित हो गये। सभा को संबोधित करते हुये सुंदर हाथी ने बिल्लू बंदर से पूछा कि तुम्हें पता कि तुम कब तक जीवन जियोगे? बिल्लू बंदर घबराकर बोला ये - मैं कैसे बता सकता हूँ? हो सकता है कि अभी गिरकर मर जाऊँ या बहुत लंबी आयु रहे।

सुंदर हाथी ने सहज खरगोश से कहा कि अच्छा सहज! तुम बताओ कि तुम्हारे जीवन पाप ज्यादा होता कि पुण्य? सहज खरगोश ने डरते हुये कहा दादा! पुण्य तो बहुत कम होता है? हम ज्यादा तो पाप ही करते हैं।
किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था आखिर हाथी दादा क्या रहे हैं? तभी मुन्नु हिरन ने हिम्मत करके पूछ लिया कि दादा! आप यह सब क्यों पूछ रहे हैं?

तब सुंदर हाथी ने गंभीरता पूर्वक कहा - मुझे मालूम हुआ है कि सन्मति वन में नये वर्ष में धूमधाम होने वाला है। हम अपना नया वर्ष तो दीपावली पर महावीर निर्वाण महोत्सव के दौरान मनाते हैं। इस साल ये नई परम्परा की शुरुआत आप करना चाहते हैं। आप नया वर्ष मनाइये लेकिन पाप करके नहीं, अच्छे काम करके।
तब चूहा बोला-वो कैसे?

हम यदि नये वर्ष पर जिनेन्द्र भगवान की पूजा-विधान का कार्यक्रम रखेंगे और दिन में गोष्ठी, अंताक्षरी करेंगे और शाम को भक्ति और प्रवचन सुनेंगे। उसके बाद सभी जानवर मंच पर आकर अपने कार्यक्रम दें। इस तरह हम पाप से भी बच जायेंगे और नयावर्ष भी हो जायेगा। बो लिए! क्या आपको मेरा प्रस्ताव मंजूर हैं।
सभी जानवर प्रसन्नता से बोले- ऐसा नया वर्ष तो हमने आज तक नहीं मनाया होगा। इस वर्ष होगा सन्मति वन का

हैप्पी न्यू इयर।

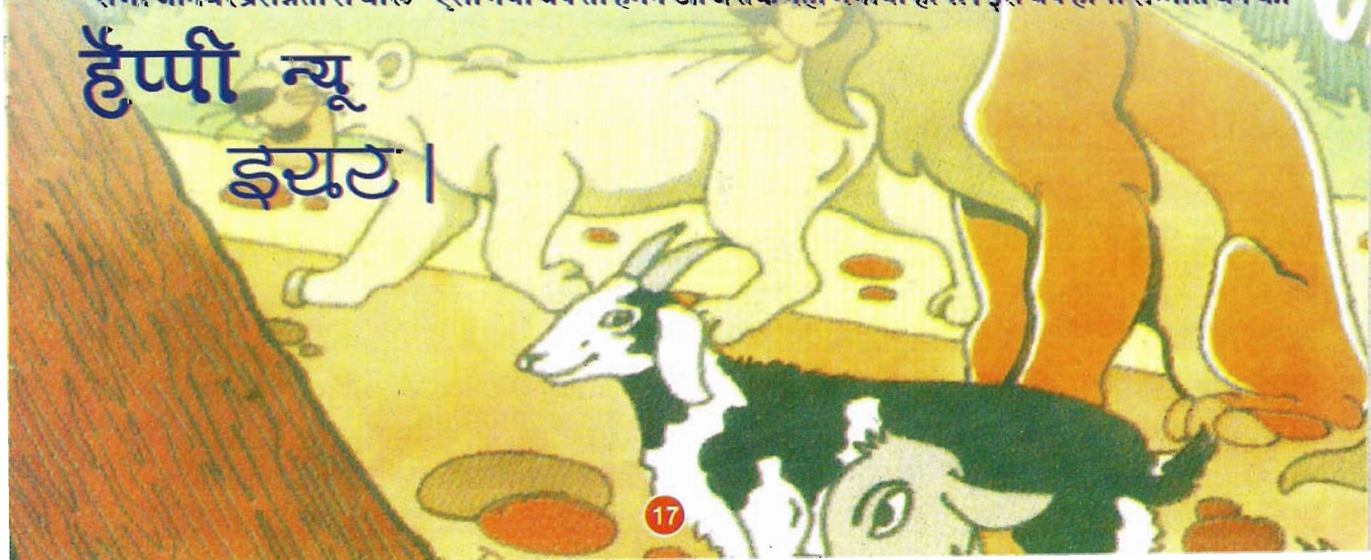

1. तीर्थंकर के गर्भ में आने के पहले रत्नों की वर्षा शुरु हो जाती है वह 15 महीने तक होती है। एक दिन में तीन बार होती है तथा एक बार में साढ़े तीन करोड़ रत्न बरसते हैं।
2. प्रत्येक समवशरण में मानस्तम्भ की ऊँचाई विराजमान तीर्थंकर की ऊँचाई से 12 गुना ज्यादा बड़ी होती है।
3. राजगृही नगरी में भगवान महावीर का समवशरण 16 बार आया।
4. समवशरण पृथ्वी से 5000 धनुष की ऊँचाई पर कुबेर द्वारा बनाया जाता है। वहाँ पहुँचने के लिये 2000 सीढ़ियाँ होती हैं।
5. जैन मुनिराज के 28 मूलगुण, 22 परीषह जय, 10 धर्म, 12 तप, 12 भावना, 13 चारित्र, 6 काय के जीवों की रक्षा, 5 आचार इस तरह कुल 108 गुण होते हैं, इसलिए उनके नाम के पूर्व 108 का प्रयोग किया जाता है।
6. सोला से तैयार भोजन को चौका कहते हैं। सोला अर्थात् नवधा भक्ति और दाता के सात गुण होते हैं।
7. सर्वार्थ सिद्धि ग्रन्थ के रचियता आचार्य पूज्यपाद को सर्प के मुँह में मेंढक को देखकर वैराग्य हुआ।
8. भारत देश में दुष्यन्त पुत्र भरत, दशरथ पुत्र भरत और ऋषभदेव पुत्र भरत एक ही नाम के तीन महापुरुष हुये परंतु भारत का नाम ऋषभदेव पुत्र भरत के नाम पर पड़ा।
9. सुगुप्ति मुनिराज के चरण प्रक्षालन के जल में लोटने से गिद्ध पक्षी के रंग स्वर्ण जैसा हो गया था।

बाल प्रतिभा

उज्जैन के चिमनगंज मंडी में रहने वाली 5 वर्ष की ध्रुविका (अणिमा) झांझरी विशेष बुद्धि की धनी है। सिद्धप्रकाश झांझरी की सुपुत्री ध्रुविका आत्मा की 47 शक्तियाँ, विदेह क्षेत्र के बीस तीर्थंकरों के नाम, अनेक बालगीत, पूजन के अर्घ्य आदि अनेक पद्य बिना रूके बोलती है। विद्यालय की पढ़ाई में भी ध्रुविका बहुत होशियार है। पारिवारिक वातावरण और पूर्व संस्कारों के प्रभाव इस नन्ही बालिका पर स्पष्ट दिखाई देते हैं।

ध्रुविका इसी तरह धर्म मार्ग पर चलते हुये अपने मनुष्य जन्म सफल करे, यही हमारी मंगल भावना है।

आपके नगर, परिवार, समाज में कोई बाल प्रतिभा हो तो जिसने लौकिक, सांस्कृतिक, नृत्य-गान, खेलकूद, अभिनय, धार्मिक रूप से कोई उपलब्धि प्राप्त की हो तो आप हमें उसका नाम, पता, फोटो और उपलब्धि लिखकर प्रेषित करें हम उसे इस स्तंभ में प्रकाशित करेंगे।

अंतिम तिथि - 25 जनवरी 2008

चित्र देखो - कहानी लिखो

Look this Picture & Write Story

इस चित्र को ध्यान से देखें और एक सुंदर सी कहानी लिखकर भेजें। ध्यान रहे कहानी मौलिक (स्वयं के द्वारा लिखी हुई) धार्मिक, जैन सिद्धांतों की या किसी शिक्षा को बताने वाली होना चाहिए। शब्द सीमा अधिकतम 150 हो। कहानी सुंदर लिखावट अथवा टाइप की हुई (हिन्दी, अंग्रेजी या गुजराती) में होना चाहिए। सर्वोत्कृष्ट कहानी को पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा एवं उसे पुरुस्कृत किया जायेगा।

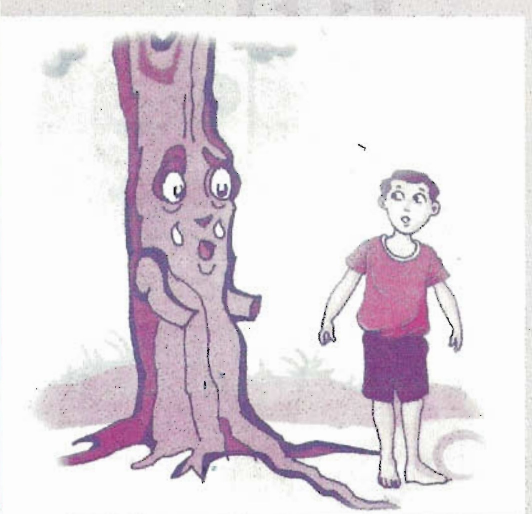

हमारा पता है :

कहानी विभाग, सर्वोदय 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.)

ये है पुरुस्कृत कहानी

पिछले अंक में हमने यह चित्र प्रकाशित किया था। इसके आधार पर आपको कहानी लिखकर भेजना थी। इसके उत्तर में हमें अनेक कहानियाँ प्राप्त हुई। चयनित कहानी को हम प्रकाशित कर रहे हैं।

– वैभव ड्योढ़िया, कटनी

एक गांव में दृष्टि नाम की लड़की अपने परिवार के साथ रहा करती थी। उसे जैन धर्म की बहुत महिमा थी। एक बार गांव में एक मुनिराज पधारे उसने मुनिराज से रात्रि भोजन त्याग का नियम ले लिया। यह देखकर लोग उसकी हंसी उड़ाने लगे कि इतनी छोटी बच्ची नियम कैसे पालेगी ? तब दृष्टि बोली - यह नियम मैंने लिया है इसका पालन करना मेरी जिम्मेदारी है आप लोग चिंता न करें। कुछ दिन के बाद में वह लड़की अपने मामा की शादी में नाना के यहाँ गई वहाँ पर रात्रि में विवाह होना था। दृष्टि ने नानाजी को कहा कि -नानाजी ! अपना जैन धर्म कहता है कि रात्रि भोजन में बहुत पाप लगता है। तब नानाजी ने कहा कि बेटी ! मुझे पता है लेकिन आजकल यह नियम कोई नहीं मानता। दृष्टि के बार-बार समझाने पर भी नानाजी नहीं माने तो दृष्टि गुस्सा होकर कोने में जाकर बैठ गई। वहीं पास में भोजन बन रहा था और ऊपर दीवाल पर गेहूँ में डालने वाली दवाई के इंजेक्शन (जिसमें जहर होता है) रखे थे। चूहों के भागने से वे इंजेक्शन नीचे बन रही सब्जी में गिर गये। गांव में लाईट कम होने से किसी को पता नहीं चला। पर दृष्टि ने सब देख लिया। उसने तुरंत नानाजी को बताया तो नानाजी ने सारी सब्जी बाहर फिकवा दी। और दृष्टि से कहा आज तुम्हारे कारण अनेक लोंगो के प्राण बच गये। वहाँ खड़े सभी लोगों ने रात्रि भोजन त्याग का संकल्प ले लिया। तब दृष्टि बोली - नानाजी यहाँ तो लाईट कम थी परंतु रात्रि में लाईट होने पर भी रात्रि में पैदा होने वाले जीव हमें आंखों से दिखाई नहीं देते। दृष्टि की मम्मी ने यह सब सुना तो उसे अपने गले से लगा लिया और कहा मुझे तुम पर गर्व है बेटी।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

CALENDER 2008

JANUARY

S		6	13	20	27
M		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
W	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	31
F	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

FEBRUARY

S		3	10	17	24
M		4	11	18	25
T		5	12	19	26
W		6	13	20	27
T		7	14	21	28
F	1	8	15	22	29
S	2	9	16	23	

MARCH

S	30	2	9	16	23
M	31	3	10	17	24
T		4	11	18	25
W		5	12	19	26
T		6	13	20	27
F		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

APRIL

S		6	13	20	27
M		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
W	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	
F	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

MAY

S		4	11	18	25
M		5	12	19	26
T		6	13	20	27
W		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
F	2	9	16	23	30
S	3	10	17	24	31

JUNE

S	1	8	15	22	29
M	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	
W	4	11	18	25	
T	5	12	19	26	
F	6	13	20	27	
S	7	14	21	28	

JULY

S		6	13	20	27
M		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
W	2	9	16	23	30
T	3	10	17	24	31
F	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

AUGUST

S	31	3	10	17	24
M		4	11	18	25
T		5	12	19	26
W		6	13	20	27
T		7	14	21	28
F	1	8	15	22	29
S	2	9	16	23	30

SEPTEMBER

S		7	14	21	28
M	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
W	3	10	17	24	
T	4	11	18	25	
F	5	12	19	26	
S	6	13	20	27	

OCTOBER

S		5	12	19	26
M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
F	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	

NOVEMBER

S	30	2	9	16	23
M		3	10	17	24
T		4	11	18	25
W		5	12	19	26
T		6	13	20	27
F		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

DECEMBER

S		7	14	21	28
M	1	8	15	22	29
T	2	9	16	23	30
W	3	10	17	24	31
T	4	11	18	25	
F	5	12	19	26	
S	6	13	20	27	

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

साबूदाना क्या खा रहे हैं आप?

साध्वी महासती जसूमती जी के शब्दों में साबूदाने के संबंध में रोगटे खड़े करने वाला आँखों देखा विवरण –

सेलम क्षेत्र में साबूदाना उद्योग एक सुविकसित उद्योग है। मद्रास और कोयम्बटूर के बीच साबूदाने के कई कारखाने हैं। अकेले सेलम के आसपास ही लगभग 250 फेक्ट्रियाँ हैं। इन कारखानों से दूर दो ढाई किलोमीटर से ही दुर्गन्ध आने लगती है। साबूदाना शकरकंद से बनाया जाता है। तमिलनाडू के इस क्षेत्र में एक शकरकंद 5-6 किलो तक का होता है।

कारखाने वाले मौसम में इसे ज्यादा मात्रा में खरीद लेते हैं। इसके गूदे को खुले मैदान में बनी कुंडियों (टाँको) मे डाल दिया जाता है और उसे कई महीनों तक सड़ाया जाता है। इस तरह हजारों टन गूदा महीनों पड़ा रहता है रात में इन कुंडियों पर बड़े-बड़े बल्ब जलाए जाते हैं, जिसके कारण अनेक जहरीले जीव जन्तु इसमे गिरते हैं और मर जाते हैं।

दूसरी ओर गूदे में पानी डालते रहते हैं। फलस्वरूप उसमे करोड़ों इल्लियाँ पड़ जाती हैं। आठ- दस दिन बाद कुंडियों में मजदूर बच्चों को उतारा जाता है तथा मजदूर बच्चे अपने पैरों से गूदे पर चलते हैं जिससे इल्लियां और गूदा मिल जाता है।

यह प्रक्रिया 4-5 माह तक चलती है। तत्पश्चात् गूदे को निकालकर मशीनों में डाला जाता है जो साबूदाना के रूप में बाहर आता है।

इस तरह से सच कहा जाये तो साबूदाना यानि करोड़ों इल्लियों का मांस।

एक आत्मा सबसे प्यारी।
दो मोह की लगी बीमारी।
तीन रतन की कर तैयारी
चार गति से छुट्टी पाई
पंचम गति करली यारी
छः द्रव्य का सार बताया
सात तत्व से भिन्न दिखाया
आठ कर्म को मार भगाया
नौ लब्धि अंतर प्रगटाई
दस धर्म की ज्योति दिखाई।

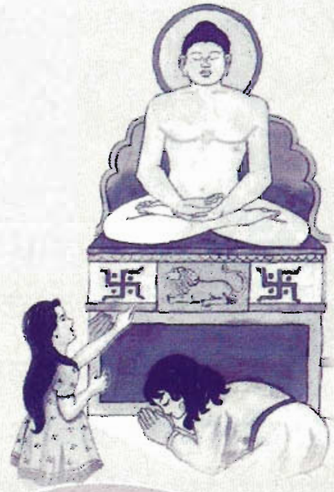

कृपया पत्रिका में विज्ञापन देकर इस बाल संस्कार अभियान में हमें सहयोग करें

चहकती चेतना - विज्ञापन दरें

कवर पृष्ठ पीछे 3/4 पृष्ठ - 5100/-
कवर पृष्ठ पीछे आधा - 3100/-
कवर पृष्ठ चौथाई भाग - 2100/-

अंदर के पृष्ठ पर रंगीन (पूरा पेज) - 3100/-
अंदर के पृष्ठ पर रंगीन (आधा पेज) - 2100/-
अंदर के पृष्ठ पर रंगीन (चौथाई पेज) - 1500/-

अंदर पेज दो कलर (पूरा पेज) - 2100/-
अंदर पेज दो कलर (आधा पेज) - 1500/-
अंदर पेज दो कलर (चौथाई पेज) - 1100/-

परिवार के मांगलिक प्रसंग, जन्मदिवस, विवाह, वर्षगांठ, आदि के अवसर पर चहकती चेतना में अपना आर्थिक योगदान देकर बाल संस्कार अभियान में योगदान दें। सहयोग राशि चहकती चेतना के नाम से ड्राफ्ट/चैक के नाम से भेज सकते हैं। आपका नाम व सहयोग पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।

जैनधर्म की ए, बी, सी

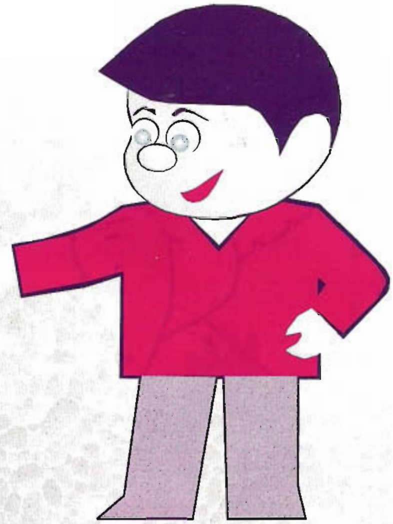

ABC of Jain Dharama

1 Flowing water I have seen,
make my heart so pure n clean.
wash VIMALNATH my dirty mind
Remove dust of my mind.

2 So many stars are in the sky,
Counting even cant I try.
Ocean I can not measure,
Such is ANANTNATHs treasuere.

3 DHARMANATH kill my karma,
you aer preacher of Dharma.
Come on My lord Almighy,
Waiting for you eagerly.

4 Achiradevis lovely son,
Give me peace and compassion.
In this World my own is none,
SHANTINATH is the only one.

रचनायें आमंत्रित

चहकती चेतना के पाठकों के लिये
विशेष अवसर
आप हमें
कवितायें,
कहानियाँ,
प्रेरक प्रसंग,
ज्ञानवर्द्धक सामग्री
प्रेषित करें। रचनायें साफ अक्षरों में अथवा टाइप की हुई होना चाहिये। पत्रिका के स्तर अनुरूप होने पर उसे पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।

कृपया ध्यान दें -

जिन सदस्यों को चहकती चेतना नहीं मिल रही है अथवा अत्याधिक विलंब से मिल रही है वे हमें अपना सदस्यता क्रमांक 9300642434 पर एस.एम.एस. करें। हमारी पत्रिका प्रत्येक तीसरे माह की 15 से 20 तारीख के बीच भेज दी जाती है।

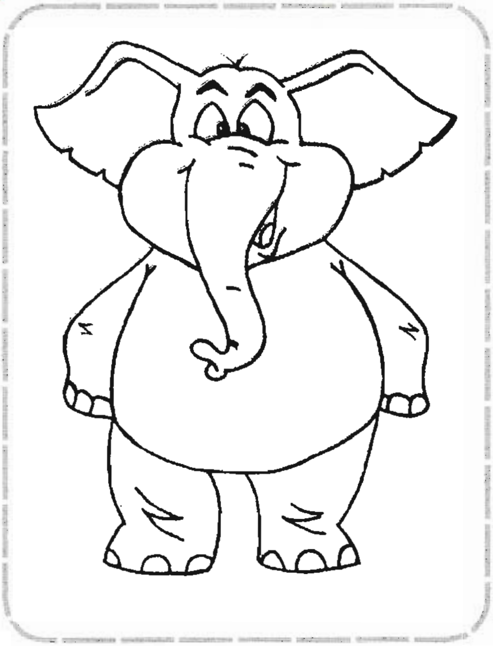

चित्र में रंग भरें एवं इस चित्र का संबंध जिनधर्म से किस प्रकार है यह भी बतायें।

Colour the picture and write a relation of this image from our Jain Dharma.

यहां लिखें ....

....

....

....

जागो चेतन प्यारे मां जिनवाणी पुकारे, । काल अनंत गये विषयों में दुख पायें अधिकारें ।।

बाल गीतों का तीसरा उपहार

मेरा वीर बनेगा बेटा

निर्माता - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर
निर्देशक - विराग शास्त्री, जबलपुर

आगामी आकर्षण

जिनधर्म की कहानियाँ
(वीडियो)

निर्माण - लक्ष्य डिजिटल प्रोडक्शन, उज्जैन
निर्माता - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर
निर्देशक - भूषण जैन, विराग शास्त्री

महिमा जैन, विक्रोली,मुंबई (6 वर्ष)

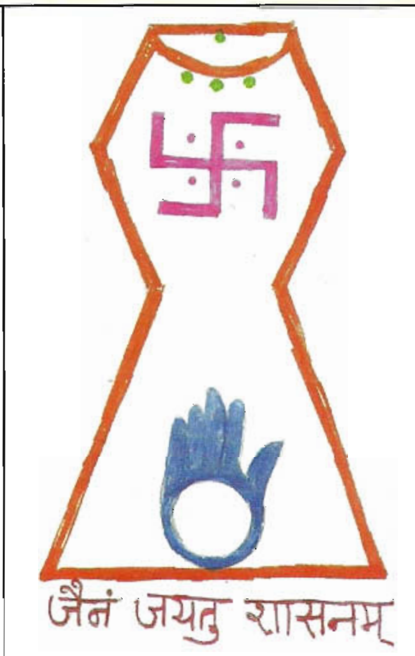

विराग जैन, विक्रोली, मुंबई (6 वर्ष)

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्न – कैलेण्डर, पेपर आदि में छपी हुई भगवान की फोटो पूजन योग्य है या नहीं?

– विनीत जैन, वर्ली मुंबई

उत्तर – जिन धर्म के अनुसार जिसमें लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई हो, जो समान अनुपात वाली हो, और पंचकल्याणकपूर्वक प्रतिष्ठित हो, वही प्रतिमा पूज्य है। कैलेण्डर आदि की भगवान की फोटो पूज्य नहीं है।

प्रश्न – किन केवली भगवान की दिव्यध्वनि नहीं खिरती?

– ज्योत्सना शाह, सूरत

उत्तर – मूक केवली और अंतः कृत केवली की दिव्य ध्वनि नहीं खिरती।

प्रश्न – इन्द्रगण जन्म कल्याणक में बाल तीर्थंकर का 1008 कलशों से अभिषेक करते हैं तो इसमें त्रसजीवों की हिंसा नहीं होती?

– रवि जैन, हजारीबाग

उत्तर – तीर्थंकर के जन्म अभिषेक का जल क्षीरोदधि समुद्र का होता है और इसके जल में त्रस जीव नहीं होते इसलिये जन्म कल्याणक में होने वाले तीर्थंकर के अभिषेक में त्रसजीवों की हिंसा नहीं होती ।

प्रश्न – क्या पद्मावती और क्षेत्रपाल की पूजा करना सही है?

– विनोद जैन, अशोक नगर

उत्तर – नहीं। पदमावती और क्षेत्रपाल आदि सभी इन्द्र देव संसारी और रागी द्वेषी हैं अतः इनकी पूजा करने में गृहीत मिथ्यात्व का महापाप लगता है।

बच्चों के लिये
एक और अनुपम उपहार

कर लो जिनवर की पूजन

वीडियो सीडी

पूजन–देवशास्त्र गुरु
पंचपरमेष्ठी पूजन

इससे पूर्व आपने शुभचन्द्र और भर्तृहरि के जीवन की वैराग्य परक व प्रेरणादायक कथा सुनी। अब इसी क्र म में हम आपके लिये लाये है चक्रवर्ती सनतकुमार की कथा।

सुना है, स्वर्ग से दो देव आये हैं मेरा रूप देखने। वाकई मैं हूँ भी तो ऐसा ही सुन्दर। मेरे समान है भी नहीं कोई सुन्दर। अब खूब श्रृंगार कर लूं। बढ़िया से बढ़िया वस्त्र आभूषण पहन कर चलूंगा राजदर-बार में। देव देखेंगे कि देखते ही रह जायेंगे मेरे रूप को। मैं हूं भी तो ऐसा सुन्दर।
दरबार में राजा बैठे हैं। दोनों देव आते हैं। वहां चक्रवर्ती को देख कर माथा धुनते हैं।
क्यों भैया क्या हुआ? परेशान क्यों हो? क्या कोई कमी नजर आई मेरे रूप में? क्या मैं सुन्दर नहीं हूं? क्या मैं तुम्हें नहीं जंचा?
राजन्! ऐसी तो कोई बात नहीं। परन्तु जो कल व्यायाम-शाला में आपका रूप देखा वैसा रूप आज नहीं।
हैं। तुम क्या कहते हो? क्या वैसा नहीं है मेरा रूप? अरे उस समय तो मुझ पर धूल भी लगी थी, न ढंग के वस्त्र, न कोई आभूषण। आज तो मैं उससे कहीं अधिक सुन्दर हूं। तुमने शायद देखने में गलती की है।
नहीं राजन! हमारी दिव्य दृष्टि धोखा नहीं खा सकती। हम आपको इसका प्रमाण भी देंगे।
शेष अगले अंक में